ISSN: P-2455-0515 E- 2394-8450

Educreator Research Journal

OPEN ACCESS

Volume–VIII, Issues– VI
Nov – Dec 2021

Original Research Article

समकालीन भारतीय शिक्षा तथा संस्कृति का सम्बन्ध

प्रो. गीता सिंह*,

*निदेशक, सेंटर फॉर प्रोफेशनल डेवलपमेंट इन हायर एजुकेशन (सीपीडीएचई), यूजीसी-मानव संसाधन विकास केंद्र, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सारांश:

प्रस्तुत शोध आलेख में शोधक ने समकालीन भारतीय शिक्षा एवं संस्कृति के आपसी संबंधों को अन्वेषित किया गया है। संस्कृति किसी समाज की पहचान होती है। मानव का सम्पूर्ण ज्ञान, प्रवृत्तियां और स्वाभाविक व्यवहार के प्रतिमान को जो किसी एक विशेष समाज के सदस्यों द्वारा प्रदर्शित किये जाते हैं और एक पीढ़ी के सदस्यों द्वारा दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित किये जाते हैं-संस्कृति कहलाते हैं। संस्कृति में किसी समुदाय के रहन-सहन एवं खान-पान की विधियों, व्यवहारों, प्रतिमानों, रीति-रिवाज, कला-कौशल, संगीत-नृत्य, भाषा, साहित्य, धर्म-दर्शन, आदर्श-विश्वास और मूल्यों को सम्मिलित किया जाता है। शिक्षा तथा संस्कृति एक दूसरे के पूरक होते हैं। जिसके फलस्वरूप किसी भी समाज की शिक्षा पर उसकी संस्कृति एवं संस्कृति पर उस समाज की शिक्षा का व्यापक प्रभाव पड़ता है। किसी भी राष्ट्र के शैक्षिक संस्थानों का यह दायित्व होता है कि वे अपने राष्ट्र की संस्कृति को सुरक्षित रखने के साथ-साथ अपनी भावी पीढ़ियों को हस्तांतरित करने के उत्तरदायित्व का निर्वहन करें। यह कार्य शिक्षा द्वारा तब ही पूरा किया जा सकता है जब शिक्षा के औपचारिक, अनौपचारिक तथा निरौपचारिक अभिकरणों के सदस्य अपनी संस्कृति से पूर्णतया अवगत हों (टी. पी. नन) समकालीन भारतीय शिक्षा के प्रत्येक पहलू और संस्कृति में व्यापक सम्बन्ध देखने को मिलता है। जिस समाज की जैसी संस्कृति होती है उस समाज के शिक्षा व्यवस्था भी वैसी होती है। प्रस्तुत शोध आलेख में समकालीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था के समस्त पहलूओं जैसे- शैक्षिक उद्देश्य, शिक्षण विधियाँ, पाठ्यक्रम, विद्यालय, कक्षा-कक्ष, अनुशासन व्यवस्था, शिक्षक तथा शिक्षार्थी की स्थिति तथा ज्ञान मूल्यांकन एवं संस्कृति के आपसी गुम्फित अंतर्संबंधों को जानने का प्रयास किया गया है।

प्रमुख शब्दावली: *समकालीन शिक्षा व्यवस्था, संस्कृति।*

Copyright © 2022 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

प्रस्तावना

"मनुष्य द्वारा अध्ययन किए हुए, हस्तांतरित किए हुए, सम्पूर्ण स्वतःक्रियाएं, आदतें, प्रणालियाँ, विचार, मूल्य और व्यवहार जो इन सबसे उत्पन्न होते हैं, संस्कृति कहलाती है।"

-एल्फ्रेड क्रोबर

किसी भी संस्कृति का जन्म समाज के सदस्यों के विशेष प्रकार के सीखे हुए व्यवहार सम्बन्धी प्रतिमानों की सुसंगठित व्यवस्था की एक लम्बी प्रक्रिया के प्रत्फल के रूप में होता है इसी प्रकार शिक्षा भी समाज के विभिन्न अभिकरणों द्वारा ही संगठित एवं संचालित की जाती है। प्रत्येक समाज की संस्कृति के अनुरूप ही शिक्षा व्यवस्था का नियोजन किया जाता है (मिश्रा, 2014)। अर्थात् शिक्षा के स्वरूप का निर्धारण उस विशेष समाज की भौतिक तथा अभौतिक संस्कृति की अंतर्क्रिया के फलस्वरूप होता है। जिस समाज की संस्कृति के मूल में धर्म, नीति एवं आध्यात्मिक की भावना का केन्द्रीय स्थान होता है तो उस समाज की शिक्षा के उद्देश्यों में परम एवं

शाश्वत मूल्यों की प्राप्ति के साथ-साथ नागरिकों के आध्यात्मिक उन्नयन की प्राप्ति पर बल दिया जाता है। इसी प्रकार यदि किसी समाज की संस्कृति में भौतिकवाद दृष्टिकोण के समावेशन की प्रधानता होती है तो उस समाज की शिक्षा द्वारा भौतिक उद्देश्यों की प्राप्ति के साथ-साथ नागरिकों में आर्थिक उन्नति पर बल दिया जाता है। अतः समाज की शिक्षा वहां की संस्कृति से प्रभावित होती है तथा शिक्षा के विभिन्न पक्षों पर संस्कृति का व्यापक प्रभाव पड़ता है (रूहेला, 2010)।

समकालीन भारतीय शिक्षा तथा संस्कृति का सम्बन्ध

प्रत्येक राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था उस राष्ट्र के स्वरूप, सामाजिक मूल्यों, सामाजिक नियमों, नीतियों, शासनतंत्र, अर्थव्यवस्था, मनोवैज्ञानिक खोजों और वैज्ञानिक अविष्कारों का अनुसरण करते हुए पुष्पित एवं पल्लवित होती है (भटनागर, 2013)। समकालीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के विभिन्न पक्षों एवं संस्कृति के अंतर्संबंधों की विस्तृत विवेचना निम्न शीर्षकों के अंतर्गत किया जा सकता है-

समकालीन भारतीय शिक्षा के उद्देश्य तथा संस्कृति का सम्बन्ध

संस्कृति एक बहुत व्यापक संप्रत्यय है इसका सम्बन्ध उन कार्यों, विचारों तथा उपकरणों से होता है जिसे एक समाज के सदस्य अपनी सम्बंधित परम्परा के अनुसार सीखते हैं दूसरों के साथ हिस्सा बंटाते हैं और उसका मूल्यांकन करते हैं। प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति में वैविध्यता परिलक्षित होती है अतः शिक्षा के उद्देश्यों में भी स्वाभाविक रूप से विविधता दृष्टिगोचर होती है (मिश्रा, 2014 तथा सिंह, 2013)। भौतिकवादी समाज की संस्कृति भौतिकवादी होती है जिसके फलस्वरूप उस समाज में शिक्षा व्यवस्था द्वारा जीवन के भौतिक उद्देश्यों की प्राप्ति पर बल दिया जाता है और जिस समाज में अभौतिक संस्कृति को प्रमुखता दी जाती है वहां शिक्षा द्वारा नागरिकों में प्रेम, करुणा, स्वावलंबन, दया, त्याग, समर्पण, परोपकार, सहयोग और नैतिकता जैसे आदर्शवादी मानवीय गुणों को विकासित करने पर बल दिया जाता है (मिश्रा, 2014)। समकालीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में भौतिक तथा अभौतिक दोनों प्रकार के सांस्कृतिक उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है परिणामस्वरूप इसका मिला-जुला रूप शिक्षा पर देखने को मिलता है।

समकालीन भारतीय शिक्षा की पाठ्यचर्या तथा संस्कृति का सम्बन्ध

शिक्षा में पाठ्यचर्या वह साधन है जिसके द्वारा शिक्षा तथा जीवन के लक्ष्यों की प्राप्ति की जाती है (भटनागर तथा भटनागर, 2013)। प्रत्येक समाज की संस्कृति एवं वहां की शिक्षा के उद्देश्यों में अंतर्संबंध परिलक्षित होता है जिसके कारण शिक्षा के उद्देश्यों के प्रभावित एवं परिवर्तित होने से शिक्षा की पाठ्यचर्या भी प्रभावित एवं परिवर्तित होती है। राष्ट्र की विचारधारा, मूल्यों, विश्वासों आदि के अनुरूप ही पाठ्यचर्या को विकसित किया जाता है। अभौतिक संस्कृति वाले समाज में अलौकिक विषयों के साथ-साथ नैतिक, धार्मिक, दार्शनिक, कलात्मक तथा साहित्य के विषयों को अधिक प्रधानता दी जाती है जबकि भौतिकतावादी संस्कृति वाले समाज में भौतिकता को ध्यान में रखते हुए विज्ञान, व्यापार, तकनीकी, अभियंत्रिकी, बैंकिंग और प्रबंधन आदि विषयों को पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाता है, (मिश्रा, 2014, गंगवार, 2017)। समकालीन भारतीय शिक्षा में भारतीय नागरिकों में कौशल विकास को प्रमुख स्थान दिया जा रहा इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में भी बालकों के लिए व्यवसायपरक पाठ्यक्रम लागू करने की सिफारिश की है इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यार्थियों के विकास की अलग-अलग अवस्थाओं के अनुसार 5+3+3+4 पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। यह पाठ्यक्रम लचीला होने के साथ-साथ विद्यार्थियों के समग्र विकास को समावेशित किए हुए है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में गतिविधि आधारित ईसीसीई (ECCE) पाठ्यक्रम, कुछ हद तक औपचारिक फाउंडेशन पाठ्यक्रम, अनुभव आधारित और अमूर्त अवधारणाओं पर आधारित मिडिल स्टेज पाठ्यक्रम तथा चार साल का बहुविषयक उच्चतर माध्यमिक अध्ययन तथा विषय के चुनाव के लचीलेपन की योजना एक ऐसे मनोवैज्ञानिक पदानुक्रम को प्रदर्शित करती है, जिससे शिक्षा का

उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक समझ न होकर चरित्र निर्माण और 21वीं शताब्दी के कौशल से सुसज्जित करना सुनिश्चित होगा (चौधरी तथा गंगवार, 2020)।

अतः नागरिकों में कौशल विकास संबंधी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पाठ्यक्रम में अभियंत्रिकी, चिकित्सा, कृषि, कम्प्यूटर शिक्षा, तकनीकी शिक्षा से संबन्धित विषयों को पाठ्यचर्या में महत्वपूर्ण स्थान दिया जा रहा है जिससे मानवीय संसाधनों को विकसित करके राष्ट्र का सर्वांगीण विकास किया जा सके (राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020)।

समकालीन भारतीय शिक्षा की शिक्षण विधियाँ एवं संस्कृति का सम्बन्ध

किसी भी समाज की संस्कृति की संस्कृति में निरंतर परिवर्तन एवं परिमार्जन होता रहता है इसके अतिरिक्त वैश्वीकरण तथा मुक्त बाज़ार के इस दौर ने विभिन्न देशों की संस्कृति को आपस में मिलाने का काम किया है (रूहेला, 2010) परिवर्तित एवं परिमार्जित होती हुई संस्कृति के अनुरूप ही शिक्षण विधियों में भी परिवर्तन करना अनिवार्य हो जाता है। जिस राष्ट्र की संस्कृतियों के अनुरूप में जिन शिक्षण विधियों का विकास हुआ है वहां की शिक्षा व्यवस्था में भी सर्वाधिक प्रयोग इन्हीं शिक्षण-अधिगम विधियों का किया जाता है। प्राचीन काल में शिक्षण कार्य मौखिक एवं कक्षा नेतृत्व प्रणाली के अनुरूप से होता था इसीलिए उस समय शिक्षण विधियों में पुनरावृत्ति, अनुकरण और कंठस्थ करने जैसी गतिविधियों पर जोर दिया जाता था इसके प्रश्नोत्तर, व्याख्यान, शंका-समाधान, अनुकरण, आदि विधियों का भी उपयोग शिक्षण-अधिगम प्रकिया को सुचारू रूप से चलाने के लिए किया जाता था (लाल तथा शर्मा, 2014)। समकालीन भारतीय शिक्षा के अंतर्गत शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में मनोविज्ञान एवं तकनीकी के समावेशन ने सम्पूर्ण शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को बाल केन्द्रित कर दिया है। अतः वर्तमान में शिक्षा के प्रत्येक स्तर की शिक्षण-अधिगम की पूरी प्रक्रिया में बालक की वैयक्तिक आवश्यकताओं, अभियोग्यताओं, अभिक्षमताओं, अभिरुचियों, सामाजिक, आर्थिक एवं मानसिक मानसिक स्तर आदि को ध्यान में रखते हुए शिक्षण विधियों एवं प्रविधियों को चयनित एवं प्रशासित किया जाता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 ने भी शिक्षण-अधिगम प्रकिया में निर्माणवादी सिद्धांतों को लागू करने की बात को स्वीकारा है जिसके चलते वर्तमान में उसी शिक्षण विधि को उपयुक्त माना जाता है जिसमें बालक को स्वयं सीखने के अवसर प्राप्त होते हैं इसलिए समकालीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में नवाचारी शिक्षण विधियों जैसे- परियोजना विधि, निर्माणवादी शिक्षण उपागम, अधिगम प्रबंधन प्रणाली, समूह चर्चा विधि, मानस मंथन विधि, अभिनयीकरण विधि, निरीक्षण अध्ययन विधि, खोजविधि और आईसीटी आधारित शिक्षण विधियाँ, मिश्रित शिक्षण अधिगम विधियाँ, भ्रमण विधि, जैसी बाल केन्द्रित शिक्षण विधियों का उपयोग किया जा रहा है जिनकी सहायता से सीखना रुचिकर और प्रभावी हो जाता है।

समकालीन भारतीय शिक्षा में अनुशासन एवं संस्कृति का सम्बन्ध

प्रत्येक समाज की संस्कृति के अनुरूप शैक्षिक व्यवस्थाका नियोजन एवं संचालन किया जाता है और इसी संस्कृति के अनुरूप ही शिक्षा में अनुशासन का प्रावधान किया जाता है (मालवीय, 2013)। जिस समाज की संस्कृति में दमनात्मक अनुशासन को स्वीकार किया जाता है वहां की शिक्षण-अधिगम परिप्रेक्ष्य में भी विद्यार्थियों के लिए दमनात्मक अनुशासन को ही स्वीकार किया जाता है। समकालीन भारतीय शिक्षा में बालक की स्वतंत्रता एवं उनकी व्यक्तिगत विभिन्नताओं को प्रमुख स्थान दिया जाता है अतः शिक्षा प्रणाली में प्रभावात्मक एवं मुक्तयात्मक अनुशासन को स्वीकार किया जाता है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 में भी बालक के लिए किसी भी प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक दंड को निषिद्ध किया गया है जिसके फलस्वरूप वर्तमान में शिक्षा में दमनात्मक अनुशासन की जगह मुक्त्यात्म्क, सामाजिक और प्रभावात्मक अनुशासन को अपनाने पर जोर दिया जाता है।

समकालीन भारतीय शिक्षा में अध्यापक तथा शिक्षार्थी की स्थिति एवं संस्कृति का सम्बन्ध

अध्यापक समाज का निर्माता होता है जिसके कारण यह किसी भी समाज की संस्कृति पर अमिट छाप छोड़ता है। अध्यापक अपने

शिक्षार्थी को समकालीन विचारों एवं नूतन शिक्षण विधियों और प्रविधियों के माध्यम से समाज की वैविध्यतापूर्ण संस्कृति से परिचित करवाता है साथ ही शिक्षार्थी भी शिक्षा ग्रहण करने के उपरांत समाज की संस्कृति में प्रगतिशील परिवर्तन, संशोधन एवं परिवर्धन में अपनी महती भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार अध्यापक और शिक्षार्थी दोनों पर संस्कृति को प्रभावित करते हैं। शिक्षक तथा शिक्षार्थी दोनों के शैक्षिक प्रक्रिया में स्थान के विषय में मत विभिन्नता विभिन्न संस्कृतियों के कारण ही पाई जाती है (मिश्रा 2013)। वर्तमान भारतीय समाज में अध्यापक-शिक्षार्थी के सम्बन्धों में खुलापन, अपनापन, आत्मीयता तथा मधुरता देखने को मिलती है जोकि समकालीन भारतीय शिक्षा में अध्यापक तथा शिक्षार्थी की स्थिति एवं संस्कृति के मधुर अंतरसंबंधों को परिलक्षित करता है।

समकालीन भारतीय शिक्षा में विद्यालय एवं संस्कृति का सम्बन्ध

अमेरिकी शिक्षाशास्त्री जॉन डीवी का मानना है कि "विद्यालय समाज का लघु रूप है" इसी प्रकार कोठारी आयोग (1964-66) ने भी अपने प्रतिवेदन में कहा है कि "भारत के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है" इस कथनों से स्पष्ट होता है कि विद्यालय वास्तव में वे सामाजिक संस्थाएं हैं जिनपर सम्बन्धित समाज और उसकी संस्कृति का प्रभावी और सार्थक प्रभाव पड़ता है। विद्यालय के भवन, मैदान, प्रयोगशालाएं तथा सभागार सम्बंधित समाज की संस्कृति के विभिन्न घटकों के अनुरूप निर्मित किए जाते हैं और इन संस्थानों के अध्यापक और विद्यार्थी समाज की संस्कृति के अनुसार व्यवहार करते हैं। इन विद्यालयों में किए जाने वाले सभी क्रियाकलाप समाज की संस्कृति के अनुरूप किए जाते है। समकालीन भारतीय शिक्षा में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में क्रिया पर आधारित शिक्षण विधियों को प्रमुख स्थान दिया गया है (शर्मा, 2015)। इसके अतिरिक्त शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों में जीवन कौशलों के विकास को भी प्रमुखता दी गई है साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुच्छेद 23 तथा 24 में तकनीकी के उपयोग तथा एकीकरण पर विस्तार से चर्चा करती है। जिसमें ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा, कृत्रिम बुद्धिमता, डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर, आभासी प्रयोगशालाएं, डिजिटल रिपोजिटरी, मिश्रित अधिगम प्रतिमान जैसे तकनीकी नवाचारों की अनुशंसा कर विद्यालयी तथा विश्वविद्यालयी शिक्षा प्रणाली को एक विकासात्मक गति प्रदान की गई है। इन सभी बातों के अनुरूप विद्यालयों में कम्प्यूटर लैब, स्मार्ट क्लासेस, उपकरणों से सुसज्जित विज्ञान प्रयोगशाला, टेलिकोंफ्रेंसिंग कक्ष, खेल के मैदान को विद्यालय में आवश्यक रूप से स्थापित किया जा रहा है।

समकालीन भारतीय शिक्षा के अन्य पहलू एवं संस्कृति का सम्बन्ध

प्रत्येक देश की संस्कृति वहां की शिक्षा के अन्य पहलुओं से भी किसी न किसी रूप में सहसम्बन्धित रहती है। यह देखा गया है कि जिन समाजों की संस्कृति में मनुष्यों में भेदभाव जैसे गुण दृष्टिगोचर होते हैं वहां प्रायः जनशिक्षा की अवहेलना की जाती है और जिन संस्कृतियों में मनुष्यों में भेदभाव नहीं होता उनमें जनशिक्षा को लागू करके समाज के अंतिम व्यक्ति को भी शिक्षित किए जाने का प्रयास किया जाता है (पटेल, 2016)। इसी प्रकार जिन संस्कृतियों के मूल में पितृसत्तात्मक गुण होते हैं उस समाज में स्त्री शिक्षा के लिए ठोस नीतियों एवं क़दमों अवहेलना की जाती है और जिस समाज की संस्कृति में स्त्री और पुरुष को समान अधिकार प्राप्त होते हैं वहां स्त्री और पुरुषों की शिक्षा में भी कोई भेद नहीं किया जाता है (सिंह तथा सिंह, 2013)। समकालीन भारतीय शिक्षा में संवैधानिक अधिकारों, कर्तव्यों एवं अधिनियमों के अनुरूप जनतांत्रिक शिक्षा की व्यवस्था की जाती है अतः इन सभी का शिक्षा से सार्थक सम्बन्ध देखने को मिलता है। वर्तमान में भारत सरकार के द्वारा विभिन्न प्रकार की शैक्षिक योजनाओं जैसे- सभी के लिए शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, शिक्षा का अधिकार अधिनियम, कौशल पर आधारित शिक्षा, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना (2004), उड़ान योजना (14 नवंबर, 2014) तथा बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (22 जनवरी, 2015) का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इन सभी योजनाओं का शिक्षा के क्षेत्र में सार्थक एवं आशानुकूल परिणाम भी देखने को मिल रहे हैं।

उपसंहार

ब्रैमिल्ड का मानना है कि *"शिक्षा को संस्कृति के संदर्भ बिना समझा नहीं समझा जा सकता संस्कृति शिक्षा को प्रतिबिंबित करती है और इस पर अपना प्रभाव डालती है।"* यह निश्चित हो चुका है कि किसी भी समाज की शिक्षा का स्वरूप मुख्य रूप से उस समाज के दर्शन, मनोवैज्ञानिक तथ्यों, राजनैतिक, आर्थिक एवं वैज्ञानिक आविष्कारों पर निर्भर करती है साथ ही समाज का स्वरूप एवं दर्शन, धर्म उसकी संस्कृति के अंग होते हैं। जिसके अलोक में हम यह कह सकते हैं कि समकालीन भारतीय शिक्षा और संस्कृति के साथ सार्थक सम्बन्ध है जोकि शिक्षा के के विभिन्न पक्षों जैसे- शैक्षिक उद्देश्य, पाठ्यक्रम तथा पाठयवस्तु, शिक्षण विधियां, विद्यालय अनुशासन व्यवस्था, शिक्षक शिक्षार्थी की स्थिति तथा विद्यालय के शैक्षिक वातावरण के साथ स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

संदर्भ सूची

भटनागर, आर. एम. (2013). *अनौपचारिक शिक्षा दिशा एवं दृष्टि*. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रंथ आकदमी. पृ. सं. 41-47.

चौधरी, एस. & गंगवार, एस. (2020). पंडित मदनमोहन मालवीय का शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020. *भारतीय आधुनिक शिक्षा. 41* (2), 13-19.

गंगवार, एस. (2017). आधुनिक भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर संस्कृति का प्रभाव: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. *उन्मेष, 3* (2), 90-93.

लाल, आर. ए. (2014). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार*. मेरठः रस्तोगी पब्लिकेशन. पृ. सं. 1-26.

लाल, आर. ए. (2014). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार*. मेरठः रस्तोगी पब्लिकेशन. पृ. सं. 447-459.

लाल, आर. ए. तथा शर्मा, के. (2013). *भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याएँ*. मेरठः आर. लाल बुक डिपो. पृ. सं. 4-22.

मिश्रा, एस. के. (2012). *भारत में शिक्षा व्यवस्था*. मेरठः आर. लाल बुक डिपो. पृ. सं. 3-22.

मिश्रा, यू. (2014). *शिक्षा का समाजशास्त्र*. इलाहाबादः अनुभव पब्लिशिंग हाउस. पृ. सं. 36-54.

मालवीय, आर. (2014). *शिक्षा का समाजशास्त्रीय सर्वेक्षण*. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन. पृ. सं. 68-78.

पटेल, पी. यू. (2016). *साक्षर महिलाएं : सामाजिक विकास का आधार*. नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन. पृ. सं. 31-73.

रूहेला, एस. पी. (2010). *शिक्षा के दार्शनिक तथा समाजशास्त्रीय आधार*. आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति. (2020). रीट्राइब्ड फ्रॉम NEP_final_HINDI_0.pdf (education.gov.in)

सक्सेना, आर. (2013). *नवाचारी शिक्षण पद्धतियां*. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रंथ आकदमी. पृ. सं. 4-12.

शर्मा, आर. ए. (2015). *शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार*. मेरठ : आर. लाल बुक डिपो. पृ. सं. 711-728.

सिंह, वी.एन. तथा सिंह, जे. (2013). *नारीवाद*. जयपुरः रावत पब्लिकेशन, पृ. सं. 384-405.

शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009. (2010). रीट्राइब्ड फ्रॉम [PDF] शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009। RTE Right to Education Act 2009 PDF Download in Hindi – PDFfile

Cite This Article:

प्रो. गीता सिंह ,(2021). *समकालीन भारतीय शिक्षा तथा संस्कृति का सम्बन्ध, Educreator Research Journal VIII (VI),135-139.*